पाण्डु रोग।

पाण्डु रोग; पाण्डु प्रधान लक्षण वाले अनेक रोगों का एक वर्ग है। जिनमें रक्ताल्पता के कारण शरीर का वर्ण पाण्डु (श्वेत-पीत) हो जाता है।

'पाण्डु रोग' वर्ण परक संज्ञा है। तथा पाण्डु वर्णता रक्ताल्पता का सूचक है।

"पाण्डुत्वेनोपलक्षितो रोगः पाण्डुरोगः।" (मा. नि.)

जिस रोग में रोगी की त्वचा का वर्ण श्वेतपीत (पाण्डु) हो जाता है उसे पाण्डुरोग कहा जाता है।

निदान :- "क्षाराम्ललवणात्युष्णविरुद्धासात्म्य भोजनात्।
निष्पावमाषपिण्याकतिलतैलनिषेवणात्॥
विदग्धेऽन्ने दिवास्वप्नाद् व्यायामान्मैथुनात्तथा।
प्रतिकर्मर्तुवैषम्याद्वेगानां च विचारणात्॥
कामचिंताभयक्रोधशोकोपहतचेतसः।" (च.चि. 16/7-9)

सम्प्राप्ति :- "दोषाः पित्तप्रधानास्तु यस्य कुप्यन्ति धातुषु।
शैथिल्यं तस्य धातूनां गौरवं चोपजायते॥
ततो वर्णबलस्नेहा ये चान्येऽप्योजसो गुणाः।
व्रजन्ति क्षयमत्यर्थं दोषदूष्यप्रदूषणात्॥
सोऽल्परक्तोऽल्पमेदस्को निःसारः शिथिलेन्द्रियः।
वैवर्ण्यं भजते, तस्य हेतुं शृणु सलक्षणम्॥" (च.चि. 16/4-6)

रस, रक्तादि धातुवह स्रोतस में पित्तप्रधान त्रिदोष के प्रकुपित होने से धातु पोषण क्रम में शिथिलता व गौरवता उत्पन्न हो जाती है। दोष-दूष्य के प्रदूषित होने से बल, वर्ण, स्नेह व ओज के गुणों का क्षय होने लगता है। परिणामस्वरूप अल्परक्तता, अल्पमेदता, निःसारता, एवं इन्द्रिय शिथिलता उत्पन्न होती है। शरीर वैवर्ण्य होता है तथा पाण्डु रोग की उत्पत्ति होती है।

सम्प्राप्ति घटक :- दोष - पित्तप्रधान, त्रिदोष प्रकोप
दूष्य - रस, रक्त, त्वचा, मांस
स्रोतस - रसवह, रक्तवह
स्रोतोदुष्टि - संग
अधिष्ठान - सर्व शरीर गत त्वचा
उद्भव - आमाशयोत्थ (संतर्पण जन्य रोग)
अग्नि - अग्निमांद्य
व्याधिस्वभाव - चिरकारी
साध्यासाध्यता - साध्य / कृच्छ्रसाध्य

Scanned with CamScanner

भेद -
च०/का० - V P K Δ मृद्भक्षण जन्य
सु० - V, P, K, Δ

पूर्वरूप :-
" तस्यालिङ्गं भविष्यतः ।
हृदयस्पन्दनं रौक्ष्यं स्वेदाभावः श्रमस्तथा ॥" (च०चि० 16/12)

- " त्वक्स्फोटनं ष्ठीवनगात्रसादौ मृद्भक्षणं प्रेक्षणकूटशोथः ।
विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाको, भविष्यतस्तस्य पुरःसराणि ॥" (सु०उ० 44/5)

लक्षण :-
- "सो अल्परक्तोऽल्पमेदस्को निःसारः शिथिलेन्द्रियः ।" (च०चि० 16/6)
- " संभूतेऽस्मिन् भवेत् सर्वः कर्णक्ष्वेडी हतानलः ।
दुर्बलः सदनोऽन्नद्विट् श्रमभ्रमनिपीडितः ॥
गात्रशूल ज्वर श्वास गौरवारुचिमान्नरः ।
मृदितैरिव गात्रैश्च पीडितोन्मथितैरिव ॥
शूनाक्षिकूटो हरितः शीर्णलोमा हतप्रभः ।
कोपनः शिशिरद्वेषी निद्रालुः ष्ठीवनोऽल्पवाक् ॥
पिण्डिकोद्वेष्टकट्यूरुपादरुक्सदनानि च ।
भवन्त्यारोहणायासैर्विशेषश्चास्य वक्ष्यते ॥" (च०चि० 16/13-16)

चिकित्सा सूत्र -

1. निदान परिवर्जन
2. संशोधन
- तत्र पाण्डुवामयी स्निग्धैस्तीक्ष्णैरूर्ध्वानुलोमिकैः ।
संशोध्यो मृदुभिस्तिक्तैः कामली तु विरेचनैः ॥ (च०चि० 16/40)
3. संशमन
- वातिके स्नेहभूयिष्ठं पैत्तिके तिक्तशीतलं ।
श्लैष्मिके कटुतिक्तोष्णं, विमिश्रं सान्निपातिके ॥ (च०चि० 16/16)

- मृद्भक्षणजन्य पाण्डु - निदान परिवर्जन, कृमि उपचार, बल्य घृत

- पथ्य अन्न सेवन

चिकित्सा

रस / भस्म / लौह / मण्डूर — मात्रा - 125 - 250mg.
अनुपान - मधु, घृत, तक्र

पुनर्नवा मण्डूर, नवायस लौह, शोथारि लौह, विडूंगादि लौह, धात्री लौह, योगराज, स्वर्ण माक्षिक भ., शु. मण्डूर भ., शंख भ.

i) वटी / वटक — 250 - 500mg — मधु / घृत / तक्र

आरोग्यवर्धिनी वटी, मण्डूर वटक, अभयावटी, तक्रवटी।

ii) चूर्ण — 2-6 gm — उष्णोदक, मधु

आमलकी चूर्ण, विशालादि चूर्ण, त्रिफला चूर्ण

iii) क्वाथ — 20 - 40ml — मधु / जल

फलत्रिकादि क्वाथ, पुनर्नवाष्टक क्वाथ,

iv) आसव / अरिष्ट — 20-40 ml.

कुमार्यासव, लोहासव, पुनर्नवासव, विडूंगारिष्ट, द्राक्षासव

v) घृत — 10-20ml. — दूध / उष्णोदक

रोहितक घृत, महातिक्त घृत, कल्याणक घृत, त्रिफला घृत

vi) अवलेह — 10-20 gm — दूध / जल

च्यवनप्राशवलेह, धात्र्यादि लेह, द्राक्षावलेह

vii) रसायन -

योगराज रसायन, त्रिफला रसायन, आमलकी रसायन, शिलाजतु रसायन, लौह रसायन, गोमूत्र हरीतकी, च्यवनप्राश, मण्डूर रसायन

viii) कल्प चि. — 125mg से start (40 दिन तक), दुग्धाहार के साथ।

लौह पर्पटी, विजय पर्पटी

Scanned with CamScanner

आदर्श चि. पत्र

1. पुनर्नवा मण्डूर - 250mg
   नवायस लौह - 125mg
   शंख भ. - 250mg
   प्रवाल पि. - 250mg
   1x2 मधु से।
2. आरोग्यवर्धिनी वटी - 2 TDS
3. लोहासव - 20ml BD
4. द्राक्षावलेह - 20gm BD
5. हरीतकी चूर्ण - 3gm रात को

पथ्यापथ्य

पथ्य - आहार - धान, शालि, मूंग-मसूर, कुष्माण्ड, परवल, गोमूत्र, जांगल मांसरस, हरिद्रा, मधु, घृत, तक्र, हरड़, शुण्ठी, आमलकी, पालक, चौलाई, मेथी, गाजर, केला, लहसुन आदि।
विहार - प्रसन्नचित्त रहना, मृदु विरेचन

अपथ्य - आहार - माष-सेम-तिल, हिंगु, ताम्बूल, सर्षप, सुरा, लवण, अम्ल, मत्स्य, अति जलपान आदि।
विहार - आतप सेवन, मैथुन कार्य, धूम्रपान, दिवाशयन, व्यायाम, वेगधारण, चिंता, क्रोध आदि।

Scanned with CamScanner